

සୃෂ්ටිකර්තෘණය ඉමාන ඉස වාස්තවිකතා ආර්ථාරිත හේ කි චීඃනේ වීනා කාරණ කේ ආර්කට නහීනේ හිතීනේ । ආර්කට වස ඉතනා වතා දෙනා කාෆීනේ කි වීශාල ඞූෂ්ටික බ්‍රහ්මාන්ඩ ඉර් ඉසමේ රහනේ වාලේ ඃීව ඉක අමූර්ත ජෙතනා රඃවතේ හේ ඉර් සාරහීන ගණිත කේ නිගමූනේ කා ආලන කරතේ හේ । ඉක සීමිත ඞූෂ්ටික බ්‍රහ්මාන්ඩ කේ අස්තිතව්ව කී ව්‍යාඃව්‍යා කරනේ කේ ලීඉ ඞී හමේ ඉක ස්වතන්ත්‍ර, සාරහීන ඉර් ෂාශ්වත ස්‍රූත කී ආවශ්‍යකතා හේ ।

ආකස්මිකතා ස්වයං බ්‍රහ්මාන්ඩ කා නිර්මාණ නහීනේ කර සකතීනේ හේ, ඉසලීඉඉ කි වහ මුඃව්‍ය කාරණ නහීනේ හේ । වල්කි වහ ද්විතීග්‍යක ආරිණාම හේ, ඃූ ඉන්‍ය කාරකූනේ (ගුග, ස්ථාන, ආදාර්ථ ඉව් ඉර්ඃ) කී ඉආලබ්‍ධතා ආර් නිර්ඞර කරතා හේ, තාකි ඉන කාරකූනේ සේ මිලකර කූර්ඃ ජීඃන අඃනක අස්තිතව්ව මේ ආඉ. අත: සංගූග (ආකස්මිකතා) ෂඃඃ කා ආර්ගූග කිසී ජීඃන කී ව්‍යාඃව්‍යා කේ ලීඉ නහීනේ කිගා ඃා සකතා හේ, ඃ්‍යූනිකි ආකස්මිකතා කූර්ඃ ඞී වස්තූ නහීනේ හේ ।

ඉදාහරණ ස්වරූආ, ගදි කූර්ඃ ව්‍යක්ති අආනේ කමරේ මේ ආවේශ කරේ ඉර් ඃිඃකි කා කාඃඃ ජූඃා හූආ ආකර අආනේ ඃර වාලූනේ සේ ආර්ශන කරේ කි කිසනේ ඃිඃකි කා කාඃඃ තූඃා ඉර් වේ ඉසකූ ඉතර දේ කි අඃනානක ජූඃ ග්‍යා හේ, තූ ග්‍ය ඉතර ගලත හූගා. ඉසලීඉඉ කි ඉසනේ ග්‍ය නහීනේ ආඃඃා ථා කි ඃිඃකි කා කාඃඃ කේසේ ජූඃා, වල්කි ඉසනේ ග්‍ය ආඃඃා ථා කි තූඃා කිසනේ හේ? ආකස්මිතා ක්‍රිගා කා වීඃේශණ හේ, න කි කර්තෘ. සහී ඉතර ග්‍ය හූගා කි වහ ක්‍රේනේ කි ඉසකූ අමුක නේ තූඃා හේ. ආර් ව්‍යාන කරේ කි ඉසනේ ඉසේ ඃානඃූඃ කර තූඃා හේ අඃනානක ජූඃ ග්‍යා හේ. ග්‍ය වාත බ්‍රහ්මාන්ඩ ඉර් සූර්ඃ්‍රිතූනේ ආර් ආරේ තූර ආර් ලාගූ හිතීනේ හේ.

ගදි හම ආර්ශන කරේ කි කිසනේ බ්‍රහ්මාන්ඩ ඉර් සූර්ඃ්‍රිතූනේ කූ වනාගා ඉර් කූර්ඃ ඉතර දේ කි ග්‍ය අඃනක වඃූද මේ ආ ග්‍යේ, තූ ග්‍ය ඉතර ගලත හූගා. ඉසලීඉඉ කි හමනේ ග්‍ය ආර්ශන නහීනේ කිගා හේ කි බ්‍රහ්මාන්ඩ වඃූද මේ කේසේ ආගා, වල්කි හමනේ ග්‍ය ආඃඃා හේ කි කිසනේ බ්‍රහ්මාන්ඩ කූ ආදා කිගා හේ. සංගූග (ආකස්මිතා) කූර්ඃ කර්තෘ නහීනේ හේ ඉර් න වහ බ්‍රහ්මාන්ඩ කා සූර්ඃ්‍රිකර්තෘ හේ.

ග්‍යා ආර්ශන ඉඃතා හේ කි ඃ්‍යා බ්‍රහ්මාන්ඩ කේ සූර්ඃ්‍රිකර්තෘ නේ ඉසේ සංගූග සේ වනා දිගා හේ ගා මකසද කේ තහ්ත වනාගා හේ? වේශක, කාර්ග ඉර් ඉසකේ ආරිණාම හී හමේ ඉසකා ඃවාව දේ සකතේ හේ.

ගදි හම ඃිඃකි කේ ඉදාහරණ කී ඉර් ලූර්ඃ ඉර් ග්‍ය මානේ කි ඉක ව්‍යක්ති අආනේ කමරේ මේ ආවේශ කරතා හේ ඉර් ඃිඃකි කා කාඃඃ ජූඃා හූආ ආතා හේ, තූ අආනේ ඃර වාලූනේ සේ ආර්ශන කරතා හේ කි කිසනේ ඃිඃකි කා කාඃඃ තූඃා ඉර් වේ ඉසකූ ඉතර දෙතේ හේ කි අමුක නේ ඉසේ සංගූග සේ තූඃ දිගා. තූ ග්‍ය ඉතර ස්වීකාර්ග ඉව් සහී හේ, ඉසලීඉඉ කි කාඃඃ කා ජූඃා වීනා ගූඃනා කේ හූනේ වාලා කාම හේ ඉර් හූ සකතා හේ කි අඃනක ගා සංගූග සේ ජූඃ ඃාඉ. ආර්න්තූ ගදි වහී ව්‍යක්ති දූසරේ දින අආනේ කමරේ මේ ආවේශ කරේ, ඉර් ආඉ කි ඃිඃකි කේ කාඃඃ කී මර්ම්මත හූ ජූකී හේ, ඉර් වහ අආනේ ඃර වාලේ සේ ඉසකේ වාරේ ආඃඃ, ඉර් වේ ඉසකූ ඉතර දේ කි අනුක නේ ඉසකූ අඃනක ජූක කර දිගා, තූ ග්‍ය ඉතර අස්වීකාර්ග හූගා, වල්කි



देखोगे। फिर पुनः देखो, क्या तुम्हें कोई दरार दिखाई देता है?" [12] "निःसंदेह हमने प्रत्येक वस्तु को एक अनुमान के साथ पैदा किया है।" [13]

[सूरा अल-मुल्क : 3] 4- ध्यान रखना :

[सूरा अल-क्रमर : 49]

ब्रह्मांड का निर्माण कुछ इस तरह किया गया है कि वह मानव जीवन के लिए बिल्कुल मुनासिब हो और यह सब अल्लाह की सुन्दरता एवं रहमत के गुणों को दर्शाता है।

"अल्लाह वह है, जिसने आकाशों तथा धरती को पैदा किया, और आकाश से कुछ पानी उतारा, फिर उसके द्वारा तुम्हारे लिए फलों में से कुछ जीविका निकाली, और तुम्हारे लिए नौकाओं को वशीभूत कर दिया, ताकि वे सागर में उसके आदेश से चलें और तुम्हारे लिए नदियों को वशीभूत कर दिया।"

[14] 5- वशीभूत तथा प्रबंध करना :

[सूरा इब्राहीम : 32]

यह अल्लाह के प्रताप तथा असीम शक्ति के गुणों से संबंधित है।

"तथा उसने चौपायों को पैदा किया, जिनमें तुम्हारे लिए गर्मी प्राप्त करने का सामान और बहुत-से लाभ हैं और उन्हीं में से तुम खाते हो। तथा उनमें तुम्हारे लिए एक सौंदर्य है, जब तुम शाम को चराकर लाते हो और जब सुबह चराने को ले जाते हो। और वे तुम्हारे बोझ, उस नगर तक लादकर ले जाते हैं, जहाँ तक तुम बिना कठोर परिश्रम के कभी पहुँचने वाले न थे। निःसंदेह तुम्हारा पालनहार अति करुणामय, अत्यंत दयावान् है। तथा घोड़े, खच्चर और गधे पैदा किए, ताकि तुम उनपर सवार हो और शोभा के लिए। तथा वह (अल्लाह) ऐसी चीजें पैदा करता है, जो तुम नहीं जानते।" [15] 6- खास करना :

[सूरा अल-नह्ल : 5-8]

इसका मतलब है कि हम ब्रह्मांड में जो भी चीज़ देखते हैं, उसके कई रूप हो सकते थे, परन्तु अल्लाह ने उसके लिए उन रूपों में से सबसे उत्तम रूप को चुना है।

"फिर तुमने उस पानी के बारे में विचार किया, जिसे तुम पीते हो? क्या तुमने उसे बादल से बरसाया है अथवा हम उसे बरसाने वाले हैं? यदि हम चाहें तो उसे खारा कर दें, फिर तुम आभार व्यक्त क्यों नहीं करते?" [16] "क्या आपने अपने पालनहार को नहीं देखा कि वह किस प्रकार छाया को फैलाता है? यदि वह चाहता, तो उसे स्थिर बना देता। फिर हमने सूर्य को उस छाया की निशानी बना दी।" [17]

[सूरा अल-वाक़िया : 68-70] कुरआन यह समझाने के लिए कई संभावनाओं का उल्लेख करता है कि ब्रह्मांड कैसे बना और कैसे अस्तित्व में आया। [18]

[सूरा अल-फ़ुरक़ान : 45] [सूरा अल-तूर : 35-37]

"क्या यह लोग बिना किसी पैदा करने वाले के स्वयं पैदा हो गए हैं या यह स्वयं पैदा करने वाले हैं ? या इन्होंने ही पैदा किया है आकाशों तथा धरती को ? वास्तव में, ये विश्वास ही नहीं रखते हैं। या फिर इनके पास आपके पालनहार के खजाने हैं या यही (उसके) अधिकारी हैं ?" [19] क्या यह लोग बिना किसी पैदा करने वाले के स्वयं पैदा हो गए हैं ? :

www.alnajat.org: 2020, 2020 & 2020; 2020 2020 20 2020. 2020 2020 2020

यह परिकल्पना कि ब्रह्मांड का कोई निर्माता नहीं है, कई प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध है, जो हम अपने आस-पास देखते हैं। एक साधारण-सा उदाहरण, जैसा कि हम कहें कि मिस्र के पिरामिड ऐसे ही अस्तित्व में आ गए हैं, इस संभावना का खंडन करने के लिए पर्याप्त है।

या यह स्वयं पैदा करने वाले हैं ? :

अपने आपको पैदा करना : क्या ब्रह्मांड अपने आपको पैदा कर सकता है ? खुद "सृष्टि" शब्द ऐसी चीज़ को इंगित करता है, जो पहले नहीं थी और फिर अस्तित्व में आई। अपने आपको पैदा करना तार्किक और व्यावहारिक रूप से असंभव है। यह इस वास्तविकता पर आधारित है कि अपने आपको पैदा करने का अर्थ यह है कि कोई चीज़ एक ही समय में मौजूद थी भी और नहीं भी। ज़ाहिर-सी बात है कि ऐसा होना असंभव है। यह कहना कि मनुष्य ने अपने आपको पैदा किया है, इसका अर्थ है कि वह अस्तित्व में आने से पहले भी मौजूद था।

यहाँ तक कि जब कुछ संशयवादी बात करते हैं और एकल-कोशिका वाले जीवों में आत्म-निर्माण की संभावना पर जोर देते हैं, तो इस चर्चा को शुरू करने के लिए पहले यह मान लेना पड़ेगा कि पहली कोशिका पहले से मौजूद रही है। फिर, यदि हम इस बात को मान लें, तो यह आत्म-निर्माण नहीं है, बल्कि यह एक प्रजनन विधि (अलैंगिक प्रजनन) है, जिससे एक ही जीव से वंश उत्पन्न होता है और उसे केवल उसी पिता की आनुवंशिक सामग्री विरासत में मिलती है।

जब आप लोगों से प्रश्न करेंगे कि आपको किसने पैदा किया है, तो बहुत-से लोग यह सादा-सा उत्तर दे देंगे कि मेरे माता-पिता मेरे इस दुनिया में आने के मूल कारण हैं। यह स्पष्ट है कि यह संक्षिप्त उत्तर है और इस गुत्थी को सुलझाने से बाहर निकलने का रास्ता खोजने का प्रयास मात्र है।

स्वाभाविक तौर पर मनुष्य गहरा मंथन करना नहीं चाहता और न इसकी कोशिश करता है। वह जानता है कि उसके माँ-बाप मर जाएंगे और वह ज़िंदा रहेगा। फिर उसके बाद उसके बच्चे आएंगे, जो यही उत्तर देंगे। वह अच्छी तरह जानता है कि उनके बच्चों को पैदा करने में उसका कोई हाथ नहीं है। अतः वास्तविक प्रश्न यह है कि किसने मानव जाति को पैदा किया ?

या उन्होंने ही आकाशों तथा धरती को पैदा किया है ? :

यह दावा कि उसी ने आकाशों एवं धरती को पैदा किया है, उस सर्वशक्तिमान अल्लाह के सिवा किसी ने नहीं किया है, जिसने मानव जाति की ओर अपने रसूलों को भेजकर इस वास्तविकता से परदा

उठाया है। सत्य तो यह है कि वही सृष्टिकर्ता, अस्तित्व प्रदान करने वाला और आकाशों तथा धरती एवं उनके बीच की सारी चीज़ों का मालिक है। उसका कोई साझी नहीं है और न ही कोई बच्चा।

"आप कह दें : उन्हें पुकारो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा (पूज्य) समझते हो। वह कण बराबर भी अधिकार नहीं रखते, न आकाशों में और न धरती में तथा उनका उन दोनों में कोई भाग नहीं है और उस अल्लाह का उनमें से कोई सहायक नहीं है।" [20] [सूरा सबा : 22]

यहाँ एक उदाहरण देख सकते हैं कि यदि किसी सार्वजनिक स्थल में कोई बैग पड़ा मिले और कोई व्यक्ति उसका दावा न करे, केवल एक व्यक्ति सामने आए और बैग तथा उसके अंदर जो कुछ है, उसकी तफ़सील यह प्रमाणित करने के लिए बताए कि बैग उसी का है, तो यह बैग उसी का माना जाएगा, जब तक कोई दूसरा दावेदार सामने न आए। यह इनसानी क़ानूनों के अनुसार है।

**सृष्टिकर्ता का अस्तित्व :**

यह तमाम बातें हमें एक ही उत्तर की ओर ले जाती हैं, जिससे भागना संभव नहीं है। वह यह है कि सृष्टिकर्ता का वजूद है। आश्चर्य है कि मनुष्य इस संभावना से दूर हमेशा बहुत सारी संभावनाओं को गढ़ता है। गोया कि यह एक काल्पनिक संभावना हो, जिसको सच मानना मुम्किन न हो और न उसकी सच्चाई का पता लगाया जा सकता हो। अगर हम निष्पक्षता और सच्चाई के साथ विचार करें और एक गहरी वैज्ञानिक दृष्टि से देखें, तो इस हकीकत तक पहुँच जाएँगे कि पूज्य सृष्टिकर्ता के बारे में सब कुछ समझ पाना संभव नहीं है। क्योंकि उसी ने पूरे ब्रह्माण्ड को पैदा किया है, इसलिए यह ज़रूरी है कि वह इन्सानी सोच से ऊपर हो। यह मानना तर्कसंगत है कि इस अदृश्य शक्ति के अस्तित्व तक पहुँचना आसान नहीं है, इसलिए ज़रूरी है कि यह शक्ति स्वयं अपने बारे इस तरह से बताए कि मानव दिमाग़ की समझ में आ जाए। इसी तरह मनुष्य के लिए भी ज़रूरी है कि वह यक़ीन करे कि यह अदृश्य शक्ति वास्तविक है, मौजूद है और इस अंतिम संभावना पर यक़ीन से भागना संभव नहीं है, जो इस कायनात के राज़ की शेष व्याख्या है।

"अतः अल्लाह की ओर दौड़ो। निश्चय ही मैं तुम्हारे लिए उसकी ओर से स्पष्ट सचेतकर्ता हूँ।" [21] यदि हम हमेशा रहने वाला जीवन, नेमत और भलाई चाहते हैं, तो हमारे लिए इस माबूद, सृष्टिकर्ता और पैदा करने वाले पर ईमान लाना एवं उसे मानना ज़रूरी है।

[सूरा अल-ज़ारियात : 50]

ଦୁର୍ଲ୍ଲଭ ଚିଢ଼ିଘଟ ଚରଣ ଓ ଚିଢ଼ିଦ୍ୱାର

୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦: ୦୦୦୦୦://୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦.୦୦୦/୦୦/୦୦/୦୦୦୦/5/

୦୦୦୦୦୦ ୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦: ୦୦୦୦୦://୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦୦.୦୦୦/୦୦/୦୦/୦୦୦୦/5/

୦୦୦୦୦୦ 13୦୦ ୦୦ ୦୦୦୦ 2026 06:20:10 ୦୦